समास

- सम्+अस्+घञ्
- एकपदीभावः समासः ।
- समसननं समासः ।
- लघुकरणं समासः ।
- संक्षिप्तीकरणं समासः ।

	समास-नाम	समास-परिभाषा	समास-परिभाषा	उदाहरण
1	केवलसमास ।	विशेष-संज्ञा-विनिर्मुक्ततः केवलः ।	संज्ञा आदि से मुक्त	भूतपूर्व (पहले हुआ), भूतार्थ (हुई बात), पूर्वोक्त (पहले कहा गया)
2	अव्ययीभाव ।	प्रायेण-पूर्वपद-प्रधानोऽव्ययीभावः ।	प्रायेण पूर्वपद प्रधान	यथास्थान, यथासमय, प्रतिदिन, प्रत्यङ्ग, आजीवन, निर्भय, यथाशीघ्र
3	तत्पुरुषसमास ।	प्रायेणोत्तरपद-प्रधानस्तत्पुरुषः ।	प्रायेण उत्तरपद प्रधान	मतदाता, रसोईघर, भारतरत्न, सत्याग्रह, विद्यालय, नीतिनिपुण। (विभक्ति-वाला)
4	बहुव्रीहिसमास ।	प्रायेणान्यपद-प्रधानो बहुव्रीहिः ।	प्रायेण अन्यपद प्रधान	नीलकण्ठ, दशानन, लम्बोदर, पीताम्बर, पङ्कज, मक्खीचूस, शूलपाणि
5	द्वन्द्वसमास ।	प्रायेणोभयपद-प्रधानो द्वन्द्वः ।	प्रायेण उभय (दोनों) पद प्रधान	माता-पिता, भाई-बहन, राम-कृष्ण, सुख-दुःख, अष्ट-विंशतिः । (चार्थे द्वन्द्वः)

3. तत्पुरुष

3.1	समानाधिकरण-तत्पुरुष	3.1.1). कर्मधारय (विशेषण-विशेष्य) – (उपमान-उपमेय) – (रूपक)	3.1.2). द्विगु – (संख्यावाची-विशेषण - विशेष्य)
3.2	व्याधिकरण-तत्पुरुष	3.2.1). षड्विभक्ति-स्वरूप वाला	
3.3	विशिष्ट-तत्पुरुष	3.3.1). नञ्-तत्पुरुष; 3.3.2). प्रादि-तत्पुरुष	3.3.3). उपपद-तत्पुरुष; 3.3.4). अलुक्-तत्पुरुष

3.1	समानाधिकरण-तत्पुरुष	3.1.1.	कर्मधारय-तत्पुरुष	कालीमिर्च, नीलकमल, पीताम्बर, नवयुवक, महापुरुष, चन्द्रवदन-मुखी, लौहपुरुष,कमलनयन, नरसिंह, चरणकमल
		3.1.2.	द्विगु-तत्पुरुष	त्रिभुवन, चौराहा, चवन्नी, नवग्रह (नवयुवक), अष्टाध्यायी, षट्रस, चतुर्वेद, चारपाई, पञ्चवटी, शताब्दी
3.2	व्याधिकरण-तत्पुरुष	3.2.1.	द्वितीय-तत्पुरुष	मतदाता, पाकिटमार, गिरहकट, चिड़िमार, कठखोदवा, स्वर्गप्राप्त, गृहगत
		3.2.2.	तृतीया-तत्पुरुष	मुँहमाँगा, जलसिक्त, प्रेमसिक्त, रसभरा, जन्मजात, मदान्ध, देहचोर, श्रमजीवी, तुलसीकृत
		3.2.3.	चतुर्थी-तत्पुरुष	रसोईघर, हथकड़ी, सत्याग्रह, युद्धभूमि, लोकहितकारी, मार्गव्यय, स्नानघर, देशभक्ति,विद्यालय, देवालय
		3.2.4.	पञ्चमी-तत्पुरुष	बलहीन, गुणहीन, पद-पथभ्रष्ट, पापमुक्त, ईश्वरविमुख, लोकोत्तर, नेत्रहीन, जलरिक्त, जलशून्य, धर्मच्युत
		3.2.5.	षष्ठी-तत्पुरुष	प्रेमसागर, दिनचर्या, भारतरत्न, अन्नदाता, रामायण, गङ्गाजल, देवालय, विद्यालय, राजपुरूष, राष्ट्रपति
		3.2.6.	सप्तमी-तत्पुरुष	नीतिनिपुण, आत्मविश्वास, घुड़सवार, पुरुषोत्तम, कविश्रेष्ठ, शरणागत, नराधम, गृहप्रवेश, शास्त्रप्रवीण
3.3	विशिष्ट-तत्पुरुष	3.3.1.	नञ्--तत्पुरुष	अविद्या, अज्ञान, अमरण, अविवेक, - अनीश्वर, अनिच्छा, अनुपस्थित, अनाधिकृत
		3.3.2.	प्रादि-तत्पुरुष	कुपुरुष / कापुरुष, सुपुत्र, कुसमय, कुपथ, कदन्न (अव्ययीभाव)
		3.3.3.	उपपद-तत्पुरुष	कुम्भकारः, पङ्कजः, स्वर्णकारः, सामगः,धनदः, इन्द्रजित्, हितकरः, जलदः, अग्रसरः, कर्मकारः
		3.3.4.	अलुक्-तत्पुरुष	गेहेशूरः, युधिष्ठिरः, अन्तेवासी, आत्मनेपदम्, परस्मैपदम्, देवानांप्रियः (मूर्ख), सरसिजः (सरसि+जः), खेचरः (खे+चरः),

4. बहुव्रीहि

4.1	समानाधिकरण-बहुव्रीहि	पीताम्बर, अष्टाध्यायी, वज्रदेह, जीतेन्द्र, चतुर्भुज, दिगम्बर, चतुरानन, लम्बोदर, दशानन
4.2	व्याधिकरण-बहुव्रीहि	शूलपाणि, चन्द्रभाल, वीणापाणि, चन्द्रबदन (चन्द्रवदन-कर्मधारय-तत्पुरुष)
4.3	तुल्योग्य (सह) - बहुव्रीहि	सबल, सपरिवार, सगुण, सरूप, सचेतन, सदेह
4.4	व्यतिहार (द्वित्व) - बहुव्रीहि	मुक्का-मुक्की, बाता-बाती, लाठा-लाठी, डण्डा-डण्डी
4.5	प्रादि-बहुव्रीहि	बेरहम, निर्जीव, निर्धन (अव्यीभाव)

5. द्वन्द्व

5.1	इतरेतर-द्वन्द्व	(चार्थे द्वन्द्व – और)	धर्माधर्म (धर्म और अधर्म), भला-बुरा, पाप-पुण्य, भाई-बहन, देवासुर, शिव-पार्वती, सीता-राम, राधा-कृष्ण, दाल-भात
5.2	समाहार-द्वन्द्व	(वगैरह-आदि)	रुपया-पैसा (रुपया-पैसा वगैरा आदि), घर-आँगन, घर-द्वार, नाक-कान, नहाया-धोया, कपड़ा-लत्ता
5.3	वैकल्पिक-द्वन्द्व	(या-अथवा)	पाप-पुण्य (पाप या पुण्य), भला-बुरा, लाभालाभ, धर्माधर्म, थोड़ा-बहुत, ठण्डा-गरम
5.4	एकशेष-द्वन्द्व	(एक-शेष)	माता च पिता च – पितरौ / मातापितरौ, रामश्च रामश्च – रामौ, देवश्च देवश्च –देवौ, ब्राह्मणश्च ब्राह्मणीश्च – ब्राह्मणौ, कुक्कुश्च-कुक्कुटीश्च - कुक्कुटौ